Volume-2, No. II, Aug-2015, pp. 84-86

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शहरीकरण का अध्ययन

श्रीमती अन्जु रानी, प्रवक्ता
आर्य कन्या इण्टर कॉलिज, सदर, मेरठ उत्तर प्रदेश भारत।

सारांशः
यह अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शहरीकरण का प्रभाव देखने के लिए किया गया है। इस अध्ययन के न्यादर्श में 100 नव्य शहरी (50 छात्र एवं 50 छात्रायें) तथा 100 ग्रामीण (50 छात्र एवं 50 छात्रायें) अनुसूचित जाति के विद्यार्थी थे। शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए विद्यार्थियों के हाईस्कूल के प्राप्तांकों को आधार बनाया गया है। नव्य शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने के लिए 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया। नव्य शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

प्रस्तावना

प्रत्येक परिवार चाहे वह किसी भी जाति या क्षेत्र का हो इस वास्तविकता को समझने लगे हैं कि विद्यार्थी का सम्पूर्ण विकास तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि बच्चों का असीम जिज्ञासा से भरे ओजस्वी ज्ञान को तृप्त एवं विकसित करने के लिए स्वस्थ वातावरण का निर्माण नहीं किया जाता। परिवार विद्यार्थी के विकास में योगदान के लिए सम्पूर्ण सुविधायें उपलब्ध कराने हेतु निरन्तर प्रयासरत रहता है। गांव से शहर की ओर पलायन करने मे इस मान्यता की अहम् भूमिका होती है। जिस प्रकार से किरणों को सूर्य से अलग नहीं किया जा सकता, खुशबू को फूल से अलग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार पारिवारिक वातावरण को मानव जीवन के उत्थान के लिए इसकी भूमिका को अलग नहीं किया जा सकता है। मानव जाति के उत्थान के लिए शिक्षा सहयोग देती है। पारिवारिक वातावरण का सहयोग भी कम नहीं रहा है।

शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व बौद्धिक स्तर निम्न होने का एक सम्भावित कारण यह है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को घर पर पढ़ने का उचित वातावरण नहीं मिल पाता है क्योंकि उनके अभिभावक अधिक पढ़े लिखे नहीं होते हैं। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को अपने परिवार के खर्चे के लिए अध्ययन के साथ–साथ कुछ कार्य भी करना पड़ता है ऐसी परिस्थितियों के कारण वह अपनी पढ़ाई पर ठीक प्रकार से ध्यान नहीं दे पाते। जिसके कारण शैक्षिक उपलब्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और इसके साथ–साथ ऐसा भी हो सकता है कि घर पर कृषि का कार्य अधिक होने के कारण पढ़ाई में अधिक ध्यान नहीं दे पाते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षार्थियों को सीमित अनुभव प्राप्त होते हैं व उन्हें परिष्कृत बौद्धिक सम्पदा नहीं मिल पाती है जिससे इनका शब्द भण्डार कम होता है और संकल्पनाएं अल्प विकसित होती हैं, कहने का तात्पर्य है कि सामान्यतः परिवारों में जहां परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया जाता है, माता–पिता बच्चों के कार्यो में रूचि लेते हैं, प्रोत्साहित करते हैं और पुरस्कार देते हैं, ऐसे परिवारों में बच्चों को किताबे, पत्रिकाऐं, शोध पत्रिकाऐं, कॉमिक्स आदि मिलते रहते हैं। उनकी स्वयं की सांस्कृतिक रूचियों के कारण शिक्षित माता–पिता शिक्षा सम्बन्धी और सामायिक घटनाओं पर बच्चे की उपस्थिति में आपस में चर्चा करते हैं, कहानियाँ और साहित्य जो उन्हें रोचक लगता है, पढ़कर सुनाते हैं उन्हें संग्रहालय, चिड़ियाघर, मेले, प्रदर्शियाँ, बगीचे, उपवन आदि दिखाने ले जाते हैं तथा विभिन्न अनुभवों को प्रदान करते हैं। बच्चों के शैक्षिक निस्पादन के प्रति सचेत रहते हैं। इससे बच्चों को बौद्धिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है जिससे उनका बौद्धिक विकास उचित तरीके से होता है, फलस्वरूप ऐसे परिवारों के विद्यार्थी चाहे वो शहरी क्षेत्र के हों या ग्रामीण क्षेत्र के, वे शैक्षिक उपलब्धि में श्रेष्ठता प्राप्त करने में प्रायः अग्रणी रहते हैं।

वर्तमान युग में विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास में पारिवारिक वातावरण एक सशक्त भूमिका अदा कर रहा है तो शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा स्वयं उत्पन्न हुई कि शहरीकरण की अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन में क्या भूमिका है? शहरी व ग्रामीण वातावरण

में वे कौन–कौन से तत्व हैं जिसमें दोनों में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
2. नव्य शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
3. नव्य शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाऐं

शोध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. नव्य शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है।
2. नव्य शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है।
3. नव्य शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्राओं की तुलना में अधिक है।

शोध प्रक्रिया

शोध अध्ययन की विधि– इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध जनसंख्या– इस शोध में मेरठ जनपद के सभी अनुसूचित जाति के विद्यार्थी जो इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययन कर रहे हैं, इस अध्ययन की जनसंख्या रहे हैं।

शोध न्यादर्श– शोध जनसंख्या में से कुल 200 विद्यार्थियों, जिनमें 100 नव्य शहरी (50 छात्र एवं 50 छात्रायें) तथा 100 ग्रामीण (50 छात्र एवं 50 छात्रायें) अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को शोध न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

शोध चर–(क) स्वतन्त्र चर–नव्य शहरी व ग्रामीण परिवेश (ख) आश्रित चर–शैक्षिक उपलब्धि

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोध अध्ययन के न्यादर्श के चयन के उपरान्त शोध आंकडे एकत्रित करने के लिए नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलबिध के मापन के लिए विद्यार्थियों के हाईस्कूल के प्राप्तांकों को आधार बनाया गया है।

शोध सांख्यिकी

शोध अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए 'टी' परीक्षण शोध सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारिणी–1: नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

समूह	नव्य शहरी विद्यार्थी (N=100)		नव्य ग्रामीण विद्यार्थी (N=100)		'टी' मान
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
शैक्षिक उपलब्धि	368.14	52.10	304.81	46.02	9.11**

** .01 स्तर पर सार्थक

सारिणी संख्या–1 को देखने पर यह कहा जा सकता है कि नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों के मध्य अन्तर ज्ञात करने हेतु संगणित 'टी' का मान 9.11 प्राप्त हुआ जो कि सारिणी मान 0.01 स्तर पर 2.63 से अधिक है। इस आधार पर पूर्व निर्धारित परिकल्पना संख्या 1 ''नव्य शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है'', स्वीकार की गयी। इससे स्पष्ट है कि नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। इन दोनों में से नव्य शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है।

सारिणी–2: नव्य शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

समूह	नव्य शहरी छात्र (N=50)		नव्य ग्रामीण छात्र (N=50)		'टी' मान
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
शैक्षिक उपलब्धि	312	48.66	294	43.24	3.04**

** .01 स्तर पर सार्थक

सारिणी संख्या–2 को देखने पर यह कहा जा सकता है कि नव्य शहरी व ग्रामीण छात्रों के मध्यमानों के मध्य अन्तर ज्ञात करने हेतु संगणित 'टी' का मान 3.04 प्राप्त हुआ जो कि सारिणी मान 0.01 स्तर पर 2.63 से अधिक है। इस आधार पर पूर्व निर्धारित परिकल्पना संख्या 2 ''नव्य शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है'', स्वीकार की गयी। इससे स्पष्ट है कि नव्य शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। इन दोनों में से नव्य शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है।

सारिणी–3: नव्य शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

समूह	नव्य शहरी छात्रायें	नव्य ग्रामीण छात्रायें	'टी'

	(N=50)		(N=50)		मान
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
शैक्षिक उपलब्धि	348.63	58.37	306.24	51.93	3.83**

** .01 स्तर पर सार्थक

सारिणी संख्या–3 को देखने पर यह कहा जा सकता है कि नव्य शहरी व ग्रामीण छात्राओं के मध्यमानों के मध्य अन्तर ज्ञात करने हेतु संगणित 'टी' का मान 3.83 प्राप्त हुआ जो कि सारिणी मान 0.01 स्तर पर 2.63 से अधिक है। इस आधार पर पूर्व निर्धारित परिकल्पना संख्या 3 ''नव्य शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्राओं की तुलना में अधिक है'', स्वीकार की गयी। इससे स्पष्ट है कि नव्य शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। इन दोनों में से नव्य शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्राओं की तुलना में अधिक है।

निष्कर्ष

1. नव्य शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर हैं नव्य शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शहरीकरण का अच्छा प्रभाव है।
2. नव्य शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि तथा ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। नव्य शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर शहरीकरण का अच्छा प्रभाव है।
3. नव्य शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। नव्य शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर शहरीकरण का अच्छा प्रभाव है।

शोध परिणामों का क्रियान्वयन

1. वर्तमान शोध अध्ययन के परिणाम इस क्षेत्र में शोध करने वाले शोधार्थियों के आधार बनेंगे इसके आधार पर नये अनुसंधान किये जा सकते हैं।
2. अध्यापक वर्तमान में नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की स्थिति से अवगत हो सकते हैं। छात्रों के लिए जहां आवश्यकता अधिक है वहां पर सकारात्मक वातावरण बना सकते हैं तथा दलित शिक्षा अध्ययन के लिए प्रभावी कदम उठा सकते हैं।
3. शिक्षण संस्थायें वर्तमान शोध के परिणामों के उन बिन्दुओं से लाभ उठाये जिन बिन्दुओं का सकारात्मक प्रभाव नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों पर पड़ता है।
4. अभिभावकों के लिए वर्तमान शोध अपने बच्चों की स्थिति जानने का आधार बनेगा अभिभावक जान सकेंगे कि किन–किन बातों का सकारात्मक प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ेगा इन बातों को वे अपने पारिवारिक वातावरण में लायेंगे जिससे नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हो सके।
5. वर्तमान शोध छात्रों को अपनी वस्तु स्थिति जानने के लिए एक आधार का कार्य करेगा नव्य शहरी व ग्रामीण विद्यार्थी ज्ञात कर सकेंगे कि किन–किन आयामों का सकारात्मक प्रभाव उन पर पड़ता है और किन–बातों का नकारात्मक प्रभाव।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुच, एम0बी0 (2000) फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
2. गुप्ता, एस0पी0 (2008) ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. कपिल, एच0के0 (2007) ''अनुसंधान विधियाँ'', हरप्रसाद भार्गव, कचहरी घाट, आगरा।
4. गैरट, हैनरी, ई0 (2005) ''शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी'' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।